RNI No.: RAJBIL/2013/54153
U.G.C. Approved No. 64524

ISSN : 2322-0074

अलख दृष्टि

ALAKH DRISHTI

(भाषा, दर्शन, साहित्य, संस्कृति एवं मानविकी की संवाहिका त्रैमासिक शोध पत्रिका)

वर्ष-6 • अंक-02 • त्रैमासिक • अप्रेल-जून, 2018

A Peer Reviewed Research Quarterly

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
01.	भारतीय चिन्तन में योग शिक्षा	डॉ. हरिराम पाण्डेय	6-13
02.	गीता का नैतिक दर्शन	प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	14-17
03.	नारी-चेतना की भारतीय पृष्ठभूमि	शर्मिला सोनी	18-22
04.	भारतीय एवं पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य में अहिंसा एवं शांति	डॉ. जुगल किशोर दाधीच	23-32
05.	पंचमहाभूतों की अवधारणा और सृष्टि-विज्ञान	डॉ. सूरज राव	33-36
06.	हाथीगुम्फा अभिलेख का मूल्यांकन	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	37-40
07.	संयमित एवं संतोषी जीवन ही मानवीय मूल्यों का आधार	समणी मंजुलप्रज्ञा	41-45
08.	Effect of Yogic Intervention on Anxiety Neurosis	Dr. Vivek Maheshwari Ram Prakash Arneja	46-51
09.	Acclimatizing the Marginalized learners into English classroom	Tripti Tripathi Dubey	52-57
	पुस्तक समीक्षा	राजेश विद्रोही	58

हाथीगुम्फा अभिलेख का मूल्यांकन

डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा

प्राचीन अभिलेखों का अध्ययन मात्र ऐतिहासिक दृष्टि से नहीं अपितु सामाजिक, धार्मिक दार्शनिक एवं नैतिक दृष्टि से भी होता है, क्योंकि उसमें तत्कालीन संस्कृति, समाज, धर्म, नागरिक, प्रशासन भौगोलिक एवं पर्यावरणीय घटनाक्रम धार्मिक एवं नैतिक महत्व के प्रसंग आदि भी प्रायः वर्णित मिलते हैं। कई बार इनमें प्रयुक्त कोई शब्द विशेष भी इतिहास, संस्कृति, दर्शनादि की कई महत्वपूर्ण गुत्थियों को सुलझाने में अति उपयोगी होता है।साथ ही अभिलेख लिखवाने वाले व्यक्ति विशेष के इतिवृत्त एवं मानसिकता का तो वे स्पष्ट रूप से प्रकाशन करते ही हैं। सभी वैशिष्ट्य अभिलेखों के वर्ण्य विषय पर आधारित है। इन्हें अभिलेखों का 'भावपक्ष' भी कहा जा सकता है, व कलापक्ष के रूप में या इसके बाह्य कलेवर की दृष्टि से भाषा, लिपि, लेखन-शैली कलात्मकता आदि के साथ-साथ ये अभिलेख तत्कालीन वैज्ञानिक चुनोतियों के भी निदर्शक होते थे।

ईसापूर्वयुगीन अभिलेखों में सर्वाधिक अभिलेख प्रियदर्शी सम्राट अशोक के द्वारा लिखवाये गये उपलब्ध होते हैं। इनमें अधिकांश शिलालेखों एवं स्तम्भलेखों के उपलब्धि- क्षेत्र तो भिन्न-भिन्न हैं। किन्तु इनमें वर्णित सामग्री किञ्चित् भिन्नताओं को छोड़कर प्रायः एक ही हैं। अतः खारवेल के अभिलेखों की संख्या भले ही अधिक परिमाण में नही हैं, किंतु कम से कम शब्दों में सुगठित रूप में समस्त अभिधेय को पिरो देना ऐसे अभिलेखों का प्राणतत्त्व माना जाता हैं इस दृष्टि से चेदिराज सम्राट खारवेल के विश्वविख्यात हाथीगुम्फा शिलालेख को हम हर तरह से आदर्श अभिलेख मान सकते हैं। यह अभिलेख न केवल विषय की दृष्टि से, अपितु भाषा-शैली एवं अभिलेखीय सिद्धातों की दृष्टि से भी अनुपम आदर्श माना जाता है।

भारतवर्ष के पूर्वी समुद्रतट पर स्थित कलिंगप्रान्त प्राचीनकाल में (ईसा की पांचवी शताब्दी तक) भारत का गौरवशाली प्रमुख राज्य था। क्योंकि भारत के पश्चिमी एवं पश्चिमोत्तर सीमान्त क्षेत्रों से विदेशी आक्रान्ताओं का आवागमन प्रायः निरन्तर चलता रहता था। अतः वहाँ राजनैतिक अस्थिरता सामाजिक-मूल्यों में संक्रमण एवं आर्थिक क्षेत्र में निरन्तर उतार-चढाव की विषमताओं के कारण विकास की धारा निरन्तर प्रभावित